लक्ष्मी सहस्रनाम स्तोत्रम

नाम्नां साश्ट सहस्रं च ब्रूहि गार्ग्य महामते
महा लक्श्म्या महा देव्या भुक्ति मुक्त्य अर्थ सिद्धये १

गार्ग्य उवाच
सनत कुमारम आसीनं द्वादज़ादित्य सन्निभम
अपद्यन योगिनो भक्त्या योगिनाम अर्थ सिद्धये २

सर्व लौकिक कर्मभ्यो विमुक्तानां हिताय वै
भुक्ति मुक्ति प्रदं जप्यम अनु ब्रूहि दयानिधे ३

सनत्कुमार भगवन सर्वज्ञो 'सि विज़ेशतः
आस्तिक्य सिद्धये ननां क्शिप्र धर्मार्थ साधनम ४

खिद्यन्ति मानवाः सर्वे धना भावेन केवलम
सिद्ध्यन्ति धनिदो 'न्यस्य नैव धर्मार्थ कामनाह ५

दारिद्र्य ध्वंसिनी नाम केन विद्या प्रकीर्तिता
केन वा ब्रह्म विद्यापि केन मत्यु विनाज़िनी ६

सर्वासां सार भूतैका विद्यानां केन कीर्तिता

प्रत्यक्श सिद्धिदा ब्रह्मन ताम आचक्श्व दयानिधे ७

सनत्कुमार उवाच
साधु पश्टं महा भागाह सर्व लोक हितैशिणः
महताम एश धर्मज़ च नान्येशाम इति मे मतिः ८

ब्रह्म विश्णु महादेव महेन्द्रादि महात्मभिः
सम्प्रोक्तं कथयाम यद्य लक्ष्मी नाम सहस्रकम ९

यस्योच्चारण मात्रेण दारिद्र्यान मुच्यते नरः
किं पुनस तज जपाज जापी सर्वेश्टार्थान अवाप्नुयात १०

अथ सघ्कल्पः
अस्य ज़्री लक्ष्मी दिव्य सहस्र नाम स्तोत्र महामन्त्रस्य
आनन्द कर्दम चिक्ळीतेन्दिरा सुतादयो महात्मानो महर्शयः,
अनुश्टुप चन्दः, विश्णुमाया ज़क्तिः, महा लक्ष्मीः परा
देवता,
ज़्री महा लक्ष्मी प्रसाद द्वारा सर्वेश्टार्थ सिद्ध्यर्थे जपे
विनियोगः

अथ ध्यानम
पद्मनाभ प्रियां देवीं पद्माक्शीं पद्मवासिनीम
पद्मवक्त्रां पद्महस्तां वन्दे पद्माम अहर निज़म १

पूर्णेन्दु वदनां दिव्य रत्ना भरण भूशिताम
वरदा भय हस्ताढ्यां ध्यायेच चन्द्र सहोदरीम २

इच्चा रूपां भगवतः सच्चिदानन्द रूपिणीम
सर्वज्झां सर्व जननीं विश्णु वक्शस स्थला लयाम
दयालुम अनिज़ं ध्यायेत सुख सिद्धि स्वरूपिणीम ३

अथ लक्ष्मी सहस्रनाम स्तोत्रम
नित्यागतानन्त नित्या नन्दिनी जनरञ्जनी
नित्य प्रकाज़िनी चैव स्वप्रकाज़ स्वरूपिणी १

महा लक्ष्मीर महा काली महा कन्या सरस्वती
भोग वैभव सन्धात्री भक्तानुग्रह कारिणी २

ईज़ावास्या महा माया महादेवी महेज़्वरी
हल्लेखा परमा ज़क्तिर मातका बीज रूपिणी ३

नित्यानन्दा नित्य बोधा नादिनी जन मोदिनी
सत्य प्रत्ययनी चैव स्वप्रकाज़ात्म रूपिणी ४

त्रिपुरा भैरवी विद्या हंसा वागीज़्वरी ज़िवा
वाग्देवी च महा रात्रिः काल रात्रिस त्रिलोचना ५

भद्रकाली कराली च महाकाली तिलोत्तमा
काली कराल वक्त्रान्ता कामाक्शी कामदा ज़ुभा ६

चण्डिका चण्ड रुपेज़ा चामुण्डा चक्र धारिणी
त्रैलोक्य जयिनी देवी त्रैलोक्य विजयोत्तमा ७

सिद्ध लक्ष्मीः क्रिया लक्ष्मीर मोक्श लक्ष्मीः प्रसादिनी
उमा भगवती दुर्गा चान्द्री दाक्शायणी ज़िवा ८

प्रत्यघ्गिरा धरावेला लोकमाता हरिप्रिया
पार्वती परमा देवी ब्रह्म विद्या प्रदायिनी ९

अरूपा बहु रूपा च विरूपा विज़्व रूपिणी
पञ्च भूतात्मिका वाणी पञ्च भूतात्मिका परा १०

काली–मा पञ्चिका वाग्मी हविः प्रत्यधि देवता
देव माता सुरेज़ाना देव गर्भा 'म्बिका धतिः ११

सघ्ख्या जातिः क्रिया ज़क्तिः प्रकतिर मोहिनी मही
यज्झ विद्या महा विद्या गुह्य विद्या विभावरी १२

ज्योतिश्मती महा माता सर्व मन्त्र फल प्रदा

दारिद्र्य ध्वंसिनी देवी हदय ग्रन्थि भेदिनी १३

सहस्रादित्य सघ्काज़ा चन्द्रिका चन्द्र रूपिणी
गायत्री सोम सम्भूतिः सावित्री प्रणवात्मिका १४

ज़घ्करी वैश्णवी ब्राह्मी सर्व देव नमस्कृता
सेव्य दुर्गा कुबेराक्शी कर वीर निवासिनी १५

जया च विजया चैव जयन्ती चापराजिता
कुब्जिका कालिका ज़ास्त्री वीणा पुस्तक धारिणी १६

सर्वज्ञ ज़क्तिः ज़्री ज़क्तिर ब्रह्म विश्णु ज़िवात्मिका
इडा पिघ्गलिका मध्या मणाली तन्तु रूपिणी १७

यज्ञेज़ानी प्रथा दीक्शा दक्शिणा सर्व मोहिनी
अश्टाघ्ग योगिनी देवी निर्बीज ध्यान गोचरा १८

सर्व तीर्थ स्थिता ज़ुद्धा सर्व पर्वत वासिनी
वेद ज़ास्त्र प्रभा देवी शड अघ्गादि पद क्रम १९

ज़िवा धात्री ज़ुभानन्दा यज्ञ कर्म स्वरूपिणी
व्रतिनी मेनका देवी ब्रह्माणी ब्रह्मचारिणी २०

एकाक्शर परा तारा भव बन्ध विनाज़िनी
विज़्वम्भरा धराधारा निराधाराधिक स्वरा २१

राका कुहूर अमावास्या पूर्णिमा ’नुमती द्युतिः
सिनीवाली ज़िवा वज़्या वैज़्वदेवी पिज़ङ्गिला २२

पिप्पला च विज़ालाक्शी रक्शोघ्नी वश्टि कारिणी
दुश्ट विद्राविणी देवी सर्वोपद्रव नाज़िनी २३

ज़ारदा ज़र सन्धाना सर्व ज़स्त्र स्वरूपिणी
युद्ध मध्य स्थिता देवी सर्व भूत प्रभञ्जनी २४

अयुद्धा युद्ध रूपा च ज़ान्ता ज़ान्ति स्वरूपिणी
गङ्गा सरस्वती वेणी यमुना नर्मदापगा २५

समुद्र वसना वासा ब्रह्माण्ड ज़्रोणि मेखला
पञ्च वक्त्रा दज़ भुजा ज़ुद्ध स्फटिक सन्निभा २६

रक्ता कश्णा सिता पीता सर्व वर्णा निरीज़्वरी
कालिका चक्रिका देवी सत्या तु बटुका स्थिता २७

तरुणी वारुणी नारी ज्येश्ठा देवी सुरेज़्वरी
विज़्वम्भरा धरा कर्त्री गलार्गल विभञ्जनी २८

सन्ध्या रात्रिर दिवा ज्योत्स्ना कला काश्ठा निमेशिका
उर्वी कात्यायनी ज़ुभ्रा संसारार्णव तारिणी २९

कपिला कीलिका ’ज़ोका मल्लिका नवमल्लिका
देविका नन्दिका ज़ान्ता भञ्जिका भय भञ्जिका ३०

कौज़िकी वैदिकी देवी सौरी रूपाधिकातिभा
दिग वस्त्रा नव वस्त्रा च कन्यका कमलोद्भवा ३१

ज़्री: सौम्य लक्शणातीतदुर्गा सूत्र प्रबोधिका
ज़्रद्धा मेधा कति: प्रज्झा धारणा कान्तिर एव च ३२

ज़्रुति: स्मतिर धतिर धन्या भूतिर इश्टिर मनीशिणी
विरक्तिर व्यापिनी माया सर्व माया प्रभञ्जनी ३३

महेन्द्री मन्त्रिणी सिंही चेन्द्र जाल स्वरूपिणी
अवस्था त्रय निर्मुक्ता गुण त्रय विवर्जिता ३४

ईशण त्रय निर्मुक्ता सर्व रोग विवर्जिता
योगि ध्यानान्त गम्या च योग ध्यान परायणा ३५

त्रयी ज़िखा विज़ेशज्झा वेदान्त ज्झान रूपिणी

भारती कमला भाशा पद्मा पद्मवती कतिः ३६

गौतमी गोमती गौरी ईज़ाना हंस वाहनी
नारायणी प्रभा धारा जाह्नवी ज़ध्ककरात्मजा ३७

चित्र घण्टा सुनन्दा ज़्रीर मानवी मनु सम्भवा
स्तम्भिनी क्शोमिणी मारी भ्रामिणी ज़त्रु मारिणी ३८

मोहिनी द्वेशिणी विरा अघोरा रुद्र रुपिणी
रुद्रैकादज़िनी पुण्या कल्याणी लाभ कारिणी ३९

देव दुर्गा महा दूता स्वप्न दुर्गा अश्टभैरवी
सूर्य चन्द्राग्नि रूपा च ग्रह नक्शत्र रूपिणी ४०

बिन्दु नाद कला तीता बिन्दु नाद कलात्मिका
दज़ वायु जया कारा कला शोडज़ संयुता ४१

काज़्यपी कमला देवी नाद चक्र निवासिनी
मडा धारा स्थिरा गुह्या देविका चक्र रूपिणी ४२

अविद्या ज़ार्वरी भुञ्जा जम्भासुर निबर्हिणी
ज़्री काया ज़्री कला ज़ुभ्रा कर्म निर्मूल कारिणी ४३

आदि लक्ष्मीर गुणा धारा पञ्च ब्रह्मात्मिका परा
ज़्रुतिर ब्रह्म मुखा वासा सर्व सम्पत्ति रूपिणी ४४

मत सञ्जीवनी मैत्री कामिनी काम वर्जिता
निर्वाण मार्गदा देवी हंसिनी काज़िका क्शमा ४५

सपर्या गुणिनी भिन्ना निर्गुणा खण्डिता ज़ुभा
स्वामिनी वेदिनी ज़क्या ज़ाम्बरी चक्र धारिणी ४६

दण्डिनी मुण्डिनी व्याघ्री ज़िखिनी सोम संहतिः
चिन्तामणिज़ चिदानन्दा पञ्च बाणाग्र बोधिनी ४७

बाण ज़्रेणिः सहस्राक्शी सहस्र भुज पादुका
सन्ध्यावलिस त्रिसन्ध्याख्या ब्रह्माण्ड मणि भूशणा ४८

वासवी दारुणी सेना कुलिका मन्त्र रञ्जनी
जित प्राण स्वरूपा च कान्ता काम्य वर प्रदा ४९

मन्त्र ब्राह्मण विद्यार्थी नाद रूपा हविश्मती
आथर्वनिः ज़्रुतिः ज़ून्या कल्पना वर्जिता सती ५०

सत्ता जातिः प्रमा ’मेया प्रमितिः प्राणदा गतिः
अवर्णा पञ्च वर्णा च सर्वदा भुवनेज़्वरी ५१

त्रैलोक्य मोहिनी विद्या सर्व भर्त्री क्शराक्शरा
हिरण्य वर्णा हरिणी सर्वोपद्रव नाज़िनी ५२

कैवल्य पदवी रेखा सूर्य मण्डल संस्थिता
सोम मण्डल मध्य स्था वह्नि मण्डल संस्थिता ५३

वायु मण्डल मध्य स्था व्योम मण्डल संस्थिता
चक्रिका चक्र मध्य स्था चक्र मार्ग प्रवर्तिनी ५४

कोकिला कुल चक्रेज़ा पक्शतिः पघ्क्ति पावनी
सर्व सिद्धान्त मार्ग स्था शड वर्णा वर वर्जिता ५५

ज़र रुद्र हरा हन्त्री सर्व संहार कारिणी
पुरुशा पौरुशी तुश्टिः सर्व तन्त्र प्रसूतिका ५६

अर्ध नारीज़्वरी देवी सर्व विद्या प्रदायिनी
भार्गवी भूजुशी विद्या सर्वोपनिशदा स्थिता ५७

व्योम केज़ाखिल प्राणा पञ्च कोज़ विलक्शणा
पञ्च कोज़ात्मिका प्रत्यक पञ्च ब्रह्मात्मिका ज़िवा ५८

जगज जरा जनित्री च पञ्च कर्म प्रसूतिका

वाग देव्या भरणा कारा सर्व काम्य स्थिता स्थिति ५९

अश्टा दश़ चतुः शश्टि पीठिका विद्यया युता
कालिका कर्शण श़्यामा यक्शिणी किन्नरेश़्वरी ६०

केतकी मल्लिका 'श़ोका वाराही धरणी ध्रुवा
नारसिंही महोग्रास्या भक्तानाम आर्ति नाश़िनी ६१

अन्तर्वला स्थिरा लक्ष्मीर जरा मरण नाश़िनी
श़्री रञ्जिता महाकाया सोम सूर्याग्नि लोचना ६२

अदितिर देवमाता च अश्ट पुत्रा अश्ट योगिनी
अश्ट प्रकतिर अश्टाश्ट विभ्राजद विकता कतिः ६३

दुर्भिक्श ध्वंसिनी देवी सीता सत्या च रुक्मिणी
ख्यातिजा भार्गवी देवी देव योनिस तपस्विनी ६४

श़ाकम्भरी महाश़ोणा गरुडोपरि संस्थिता
सिंहगा व्याघ्रगा देवी वायुगा च महाद्रिगा ६५

अकारा दिक्श कारान्ता सर्व विद्याधि देवता
मन्त्र व्याख्यान निपुणा ज्योतिः श़ास्त्रैक लोचना ६६

इडा पिङ्गलिका मध्या सुशुम्ना ग्रन्थि भेदिनी
काल चक्रा ज़्रयोपेता काल चक्र स्वरूपिणी ६७

वैज़ारदी मति ज़्रेश्ठा वरिश्ठा सर्व दीपिका
वैनायकी वरारोहा ज़्रोणि वेला बहिर्वलिः ६८

जम्भिनी जम्भिणी जम्भ कारिणी गण कारिका
ज़रणी चक्रिकानन्ता सर्व व्याधि चिकित्सकी ६९

देवकी देव संकाज़ा वारिधिः करुणा करा
ज़र्वरी सर्व सम्पन्ना सर्व पाप प्रभञ्जनी ७०

एक मात्रा द्वि मात्रा च त्रि मात्रा च तथा 'परा
अर्ध मात्रा परा सूक्श्मा सूक्श्मार्थार्थ परा 'परा ७१

एकवीरा विज़ेशाख्या शश्ठी देवी मनस्विनी
नैश्कर्म्या निश्कला लोका ज्ञान कर्माधिका गुणा ७२

सबन्ध्वानन्द सन्दोहा व्योमा कारा 'निरूपिता
गद्य पद्यात्मिका वाणी सर्वा लङ्कार संयुता ७३

साधु बन्ध पद न्यासा सर्वौको घटिकावलिः
शट कर्मा कर्कज़ा कारा सर्व कर्म विवर्जिता ७४

आदित्य वर्णा चापर्णा कामिनी वर रूपिणी
ब्रह्माणी ब्रह्म सन्ताना वेद वागीज़्वरी ज़िवा ७५

पुराण न्याय मीमांसा धर्म ज़ास्त्रागम ज़्रुता
सद्यो वेदवती सर्वा हंसी विद्याधि देवता ७६

विज़्वेज़्वरी जगद्धात्री विज़्व निर्माण कारिणी
वैदिकी वेद रूपा च कालिका काल रूपिणी ७७

नारायणी महादेवी सर्व तत्त्व प्रवर्तिनी
हिरण्य वर्ण रूपा च हिरण्य पद सम्भवा ७८

कैवल्य पदवी पुण्या कैवल्य ज्ञान लक्शिता
ब्रह्म सम्पत्ति रूपा च ब्रह्म सम्पत्ति कारिणी ७९

वारूणी वारुणा राध्या सर्व कर्म प्रवर्तिनी
एकाक्शर परा 'युक्ता सर्व दारिद्र्य भङ्जिनी ८०

पाज़ा अघ्कुज़ान्विता दिव्या वीणा व्याख्याक्श सूत्र भत
एक मूर्तिस त्रयी मूर्तिर मधु कैटभ भञ्जनी ८१

साघ्ख्या साघ्ख्यवती ज्वाला ज्वलन्ती काम रूपिणी

जाग्रन्ती सर्व सम्पत्तिः सुशुप्तान्वेश्ट दायिनी ८२

कपालिनी महा दंस्ट्रा भ्रुकुटी कुटिलानना
सर्वा वासा सुवासा च बहत्य अश्टिज़ च ज़ङ्करी ८३

चन्दो गण प्रतिश्ठा च कल्माशी करुणात्मिका
चक्शुश्मती महाघोशा खड्ग चर्म धराज़निः ८४

ज़िल्प वैचित्र्य विद्योता सर्वतोभद्र वासिनी
अचिन्त्य लक्शणा कारा सूत्र भाश्य निबन्धना ८५

सर्व वेदार्थ सम्पत्तिः सर्व ज़ास्त्रार्थ मातका
अकारा दिक्श कारान्त सर्व वर्ण कत स्थला ८६

सर्व लक्ष्मीः सदानन्दा सारविद्या सदाज़िवा
सर्वज्ञा सर्व ज़क्तिज़ च खेचरी रूप गोच्चिरता ८७

अणिमादि गुणोपेता परा काश्ठा परा गतिः
हंस युक्त विमान स्था हंसारूडा ज़ज़िप्रभा ८८

भवानी वासना ज़क्तिर आकतिस्था ’खिलाखिला
तन्त्र हेतुर विचित्राघ्गी व्योम गघ्गा विनोदिनी ८९

वर्शा च वार्शिका चैव ग यजुस साम रूपिणी
महा नदी नदी पुण्या 'गण्या पुण्य गुणक्रिया ९०

समाधि गत लभ्यार्था ज़्रोतव्या स्वप्रिया घणा
नामाक्शर परा देवी उपसर्ग नखाङ्चिता ९१

निपातोर उद्वयी जघ्घा मातका मन्त्र रूपिणी
आज़ीना च ज़याना च तिश्ठन्ती धावनाधिका ९२

लक्श्य लक्शण योगाढ्या ताद रूप्य गणन आकतिः
सैक रूपा नैक रूपा सेन्दु रूपा तद आकतिः ९३

समासतद धिता कारा विभक्ति वचनात्मिका
स्वाहा कारा स्वधा कारा ज़्री पत्य अर्धाघ्ग नन्दिनी ९४

गम्भीरा गहना गुह्या योनि लिघ्गार्ध धारिणी
ज़ेश वासुकि संसेव्या चशाला वर वर्णिनी ९५

कारुण्या कार सम्पत्तिः कील कन मन्त्र कीलिका
ज़क्ति बीजात्मिका सर्व मन्त्रेश्टा क्शाय कामना ९६

आग्रेयी पार्थिवा आप्या वायव्या व्योम केतना
सत्य ज्झानात्मिका 'नन्दा ब्राह्मी ब्रह्म सनातनी ९७

अविद्या वासना माया प्रकतिः सर्व मोहिनी
ज़क्तिर धारण ज़क्तिज़ च चिद अचिच चक्ति योगिनी ९८

वक्त्रारुणा महा माया मरीचिर मद मर्दिनी
विराट स्वाहा स्वधा ज़ुद्धा नीरूपास्तिः सुभक्तिगा ९९

निरूपित द्वयी विद्या नित्यानित्य स्वरूपिणी
वैराज मार्ग सञ्चारा सर्व सत्पथ दर्ज़िनी १००

जालन्धरी मडानी च भवानी भव भञ्जनी
त्रै कालिक ज्झान तन्तुस त्रि काल ज्झान दायिनी १०१

नादातीता स्मतिः प्रज्झा धात्री रूपा त्रिपुश्करा
पराजिता विधानज्झा विज़िशित गुणात्मिका १०२

हिरण्य केज़िनी हेम ब्रह्म सूत्र विचक्शणा
असघ्ख्येय परार्धान्त स्वर व्यञ्जन वैखरी १०३

मधुजिह्वा मधुमती मधु मासो दया मधुः
माधवी च महाभागा मेघ गम्भीर निस्वना १०४

ब्रह्म विश्णु महेज़ादि ज्झात व्यार्थ विज़ेशगा

नाभौ वह्नि ज़िखा कारा ललाटे चन्द्र ज़न्निभा १०५

भ्रू मध्ये भास्करा कारा सर्व तारा कतिर हदि
कत्तिकादि भरण्य अन्त नक्शत्रेश्व्य आर्चितो दया १०६

ग्रह विद्यात्मिका ज्योतिर ज्योतिर विन्मति जीविका
ब्रह्माण्ड गर्भिणी बाला सप्ता वरण देवता १०७

वैराजोत्तम साम्राज्या कुमार कुज़लो दया
बगला भ्रम रांबा च ज़िवदूती ज़िवात्मिका १०८

मेरु विन्ध्याति संस्थाना काज़्मीर पुर वासिनी
योगनिद्रा महानिद्रा विनिद्रा राक्शस आज़्रिता १०९

सुवर्णदा महा गघ्गा पञ्चाख्या पञ्च संहतिः
सुप्रजाता सुवीरा च सुपोशा सुपतिः ज़िवा ११०

सुगहा रक्त बीजान्ता हत कन्दर्प जीविका
समुद्र व्योम मध्यस्था सम बिन्दु समाज़्रया १११

सौभाग्य रस जीवातुः सारा सार विवेक दक
त्रिवल्यादि सुपुश्टाघ्गा भारती भरताज़्रिता ११२

नाद ब्रह्म मयी विद्या ज्झान ब्रह्ममयी परा
ब्रह्म नाडी निरुक्तिज़ च ब्रह्म कैवल्य साधनम ११३

कालिकेय महोदार वीर्य विक्रम रूपिणी
वडवाग्नि ज़िखा वक्त्रा महा कवल तर्पणा ११४

महाभूता महादर्पा महासारा महाक्रतुः
पञ्च भूत महाग्रासा पञ्च भूतादि देवता ११५

सर्व प्रमाणा सम्पत्तिः सर्व रोग प्रतिक्रिया
ब्रह्माण्डान्तर बहिर व्याप्ता विश्णु वक्शो विभूशिणी ११६

ज़ाघ्करी विधि वक्त्र स्था प्रवरा वर हेतुकी
हेम माला ज़िखा माला त्रिज़िखा पञ्च मोचना ११७

सर्वागम सदाचारा मर्यादा यातु भञ्जनी
पुण्य ज़्लोक प्रबन्धाढ्या सर्वान्तर्यामि रूपिणी ११८

साम गान समाराध्या ज़्रोत्र कर्ण रसायनम
जीव लोकैक जीवातुर भद्रो दार विलोकना ११९

तडित कोटि लसत कान्तिः तरुणी हरि सुन्दरी
मीन नेत्रा च सेन्द्राक्शी विज़ालाक्शी सुमघ्गाला १२०

सर्व मघ्गल संपन्ना साक्शान मघ्गल देवता
देह हद दीपिका दीप्तिर जिह्म पाप प्रणाज़िनी १२१

अर्ध चन्द्रोल्लसद दंस्ट्रा यज्झ वाटी विलासिनी
महादुर्गा महोत्साहा महादेव बलोदया १२२

डाकिनीड्या ज़ाकिनीड्या साकिनीड्या समस्तजुट
निरघ्कुज़ा नाकिवन्द्या शडा धाराधि देवता १२३

भुवन ज्झानिनिः ज़्रेणी भुवनाकार वल्लरी
ज़ाज़्वती ज़ाज़्वता कारा लोकानुग्रह कारिणी १२४

सारसी मानसी हंसी हंस लोक प्रदायिनी
चिन मुद्रा अलघ्कत करा कोटि सूर्य सम प्रभा १२५

सुख प्राणिः ज़िरो रेखा नद दश्ट प्रदायिनी
सर्व साघ्कर्य दोशघ्नी ग्रहोपद्रव नाज़िनी १२६

क्शुद्र जन्तु भय घ्नी च विश रोगादि भञ्जनी
सदा ज़ान्ता सदा ज़ुद्धा गहच चिद्र निवारिणी १२७

कलि दोश प्रज़मनी कोलाहल पुर स्थिता

गौरी काक्शणिकी मुख्या जघन्याकति वर्जिता १२८

मायाविद्या मूल भूता वासवी विश्णु चेतना
वादिनी वसु रूपा च वसु रत्न परिच्चदा १२९

चांदसी चन्द्र हदया मन्त्र स्वच्चन्द भैरवी
वनमाला वैजयन्ती पञ्च दिव्या युधात्मिका १३०

पीताम्बर मयी चञ्चत कौस्तुभा हरि कामिनी
नित्या तथ्या रमा रामा रमणी मत्यु भञ्जनी १३१

ज्येश्ठा काश्ठा धनिश्ठान्ता ज़राघ्गी निर्गुण प्रिया
मैत्रेया मित्रविन्दा च ज़ेश्य ज़ेश कला ज़या १३२

वाराणसी वासरताच आर्यावर्त जन स्तुता
जगद उत्पत्ति संस्थान संहार त्रय कारणम १३३

त्वम अम्ब विश्णु सर्वस्वं नमस्ते ’स्तु महेज़्वरि
नमस्ते सर्व लोकानां जनन्यै पुण्य मूर्तये १३४

सिद्ध लक्ष्मीर महाकालि महालक्ष्मी नमो ’स्तु ते
सद्योजातादि पञ्चाग्निः रुपा पञ्चक पञ्चकम १३५

यन्त्र लक्ष्मीर भवत्य आदिर आद्य आद्ये ते नमो नमः
सश्ट्यादि कारणा कार वितते दोश वर्जिते १३६

जगल लक्ष्मीर जगन मातर विश्णु पत्नि नमो ’स्तु ते
नव कोटि महाज़क्ति समुपास्य पदाम्बुजे १३७

कनत सौवर्ण रत्नाढ्ये सर्वा भरण भूशिते
अनन्ता नित्य महिशि प्रपञ्चेज़्वर नायकि १३८

अत्य उच्छ्रित पदान्तस स्थे परम व्योम नायकि
नाक पश्ठ गताराध्ये विश्णु लोक विलासिनि १३९

वैकुण्ठ राज महिशि ज़्री रघ्ग नगराज़्रिते
रघ्ग नायकि भू पुत्रि करुणे वरद वल्लभे १४०

कोटि ब्रह्मादि संसेव्ये कोटि रुद्रादि कीर्तिते
मातुलघ्ग मयं खेटं सौवर्ण चशकं तथा १४१

पद्म द्वयं पूर्ण कुंभं कीरं च वरदाभये
पाज़म अघ्कुज़कं ज़घ्खं चक्रं ज़ूलं कपाणिकाम १४२

धनुर बाणौ चाक्श मालां चिन्मुद्राम अपि बिभ्रती
अश्टादज़ भुजे लक्ष्मी महाश्टादज़ पीठगे १४३

भूमि नीलादि संसेव्ये स्वामि चित्तानुवर्तिनि
पद्मे पद्मालये पद्मि पूर्ण कुम्भा अभिशेचिते १४४

इन्दिरेन्दिरा अभाक्शि क्शीर सागर कन्यके
भार्गवि त्वं स्व तन्त्रेच्चा वज़ी कत जगत पतिः १४५

मघ्गलं मघ्गलानां त्वं देवतानां च देवता
त्वम उत्तमोत्तमानां च त्वं ज़्रेयः परमामतम १४६

धन धान्या भिवद्धिज़ च सार्वभौम सुखोच्च्रया
आन्दोलिकादि सौभाग्यं मत्तेभादि महोदयः १४७

पुत्र पौत्राभि वद्धिज़ च विद्या भोग बलादिकम
आयुर आरोग्य सम्पत्तिर अश्टैज़्वर्यं त्वम एव हि १४८

पदम एव विभूतिज़ च सूक्श्मात सूक्श्मतरा गतिः
सदया आपाघ्ग सन्दत्त ब्रह्मेन्द्रादि पद स्थितिः १४९

अव्याहत महाभाग्यं त्वम एवाक्शोभ्य विक्रमः
समन्वयज़ च वेदानाम अविरोधस त्वम एव हि १५०

निःज़्रेयस पद प्राप्ति साधनं फलम एव च

ज़्री मन्त्र राज राज्झी च ज़्रीविद्या क्शेम कारिणी १५१

ज़्रीं बीज जप सन्तुश्टा ऐं–ह्रीम–ज़्रीम–बीज पालिका
प्रपत्ति मार्ग सुलभा विश्णु प्रथम किघ्करी १५२

क्लीं कारार्थ सावित्री च सौमघ्गल्या अधिदेवता
ज़्री शोडज़ाक्शरी विद्या ज़्री यन्त्र पुर वासिनी १५३

सर्व मघ्गल माघ्गल्ये ज़िवे सर्वार्थ साधिके
ज़रण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमो 'स्तु ते
पुनः पुनर नमस्ते 'स्तु साश्टाघ्गम युतं पुनः १५४

सनत्कुमार उवाच
एवं स्तुता महालक्ष्मीर ब्रह्म रुद्रादिभिः सुरैः
नमद्भिर आर्तैर दीनैज़ च निस्स्वत्वैर भोग वर्जितैः १५५

ज्येश्ठा जुश्टैज़ च निःज़्रीकैः संसारा स्व परायणैः
विश्णुपत्नी ददौ तेशां दर्ज़नं दश्टि तर्पणम १५६

ज़रत पुर्णेन्दु कोट्याभ धवलापाघ्ग वीक्शणैः
सर्वान सत्त्व समाविश्टान चक्रे हश्टा वरं ददौ १५७

महालक्ष्मीर उवाच

नाम्नां साश्ट सहस्रं मे प्रमादाद्वापि यः सकत
कीर्तयेत तत कुले सत्यं वसाम्या चन्द्र तारकम १५८

किं पुनर नियमाज जप्तुर मद एक ज़रणस्य च
मात वत्सानुकम्पाहं पोशकी स्याम अहर निज़म १५९

मन नाम स्तवतां लोके दुर्लभं नास्ति चिन्तितम
मत प्रसादेन सर्वे 'पि स्वस्वेश्टार्थम अवाप्स्यथ १६०

लुप्त वैश्णव धर्मस्य मद व्रतेश्च अवकीर्णिनः
भक्ति प्रपत्ति हीनस्य वन्द्यो नाम्नां स्तवो 'पि मे १६१

तस्माद अवज़्यं तैर दोशैर विहीनः पाप वर्जितः
जपेत साश्ट सहस्रं मे नाम्नां प्रत्यहम आदरात १६२

साक्शाद अलक्ष्मी पुत्रो 'पि दुर्भाग्यो 'प्य अलसो 'पि वा
अप्रयत्नो 'पि मूढो 'पि विकलः पतितो 'पि च १६३

अवज़्यं प्राप्नुयाद भाग्यं मत्प्रसादेन केवलम
स्पहेयम अचिराद देवा वरदानाय जापिनः
ददामि सर्वम इश्टार्थं लक्ष्मीति स्मरतां ध्रुवम १६४

सनत्कुमार उवाच

इत्य उक्त्वा अन्तर्दधे लक्ष्मीर वैश्णवी भगवत कला
इश्टा पूर्तं च सुकतं भाग धेयं च चिन्तितम १६५

स्वं स्वं स्थानं च भोगं च विजयं लेभिरे सुराः
तद एतत प्रवदाम्य अद्य लक्ष्मी नाम सहस्रकम
योगिनः पठत क्शिप्रं चिन्तितार्थान अवाप्स्यथ १६६

गार्ग्य उवाच
सनत कुमारो योगीन्द्र इत्य उक्त्वा स दयानिधिः
अनुगह्य ययौ क्शिप्रं तांज़ च द्वादज़ योगिनः १६७

तस्माद एतद रहस्यं च गोप्यं जप्यं प्रयत्नतः
अश्टम्यां च चतुर्दज़्यां नवाभ्यां भगु वासरे १६८

पौर्णमास्याम अमायां च पर्व काले विज़ेशतः
जपेद वा नित्य कार्येशु सर्वान कामान अवाप्नुयात १६९

इति स्कन्द पुराणे सनत्कुमार सम्हितायाम
ज़्री लक्ष्मी सहस्र नाम स्तोत्रं संपूर्णम